कथा क्रम

अक्टूबर–दिसम्बर, 2024

मूल्य – ₹ 50

कथासाहित्य
कला
एवं
संस्कृति
की
त्रैमासिकी

कथा क्रम - 2024
लखनऊ– 09 नवम्बर 2024
आनंद सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान 2024
सम्मानित कथाकार- रणेन्द्र
संगोष्ठी– सत्ता, संस्थाएं और साहित्य

कथा क्रम - 2024

हिन्दी कथा साहित्य पर केन्द्रित अखिल भारतीय
09 नवम्बर 2024

केन्द्रित अखिल भारतीय आयोजन
09 नवम्बर 2024
कथाक्रम सम्मान 2024
संस्थाएं और साहित्य

ISSN-2231-2161

वर्ष : 27 अंक : 102

अक्टूबर-दिसम्बर 2024

कथा क्रम

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

कहानियां

17 **गोविन्द मिश्र** : पहली किताब
21 **जय प्रकाश कर्दम** : हिंदी पुस्तकालय
28 **सैली बलजीत** : बेशर्म
33 **अशोक कुमार प्रजापति** : दो घुमक्कड़
56 **हरभजन सिंह मेहरोत्रा** : तीन बुड्ढे
62 **उपेन्द्र कुमार मिश्र** : कोख में खोट
68 **राजकुमार सिंह** : एक दिन अचानक
73 **आदित्य अभिनव** : सिंदूरी आभा

लघुकथाएं

20 **लता कादम्बरी गोयल** : परछाई
27 **महेश कुमार केशरी** : डर
61 **सत्य शुचि** : निरीह पंछी
78 **लता गोयल** : औरत का घर
84 **अरिमर्दन कुमार सिंह** : बचपना

कथा-नेपथ्य

05 **मधुरेश** : बुर्जों की निष्कवच परिधियां

लेख

45 **डॉ. रविकांत चंदन** : वर्ण-जाति में विभाजित भारतीय समाज
51 **डॉ. उमा मीणा** : आदिवासियों के मोहभंग की कहानी 'आदिवासी नहीं नाचेंगे'

कविताएं

79 **कौशल किशोर** : अम्मा का कोना, उसका जाना, गिरना
80 **ललन चतुर्वेदी** : यह देवताओं के सोने का समय है, समय-कुछ शब्द चित्र
81 **दिवाकर पाण्डेय** : चिड़िया की कैद
82 **अनिल किशोर** : उस पर...., बंद आंखों से...,
82 **मनीष यादव** : तीन कविताएं
83 **मनु मौसम** : कुछ नए शब्द बनाते हैं

डायरी

85 **रमेश खत्री** : डायरी के पन्नों में कैद समय की किरचें

कथा-शोध

91 **सृष्टि कुमारी** : 'सुनीता' उपन्यास में 'घर' और 'बाहर' : राष्ट्रवादी राजनीति के नजरिये से

समीक्षाएं

95 **अनुपम ओझा** : बैल की आंख (उपन्यास : संतोष दीक्षित)
97 **पूजा प्रसाद** : महात्मा और भारतीय महिला का परिचय कराती (उपन्यास : अलका सरावगी)
100 **रामनाथ शिवेन्द्र** : अलगनी पर समय (उपन्यास : वीरेन्द्र सारंग)
101 **अल्पना सिंह** : मेरे बसंत के वर्ष फिर आना (उपन्यास : रवि कुमार सिंह)
104 **वंदना बाजपेयी** : अप्रवीणा (उपन्यास : निधि अग्रवाल)

रपट

106 **प्रताप दीक्षित** : कथाक्रम 2024 : सत्ता, संस्थाएं और साहित्य के अंतरसंबंध पर सार्थक बहस
2 **सम्पादकीय** : कुछ विदेश और कुछ देश की
आवरण : **बंसीलाल परमार**
रेखाचित्र : **शैलेन्द्र सरस्वती**

संपादक
शैलेन्द्र सागर
संपादन परामर्श
रजनी गुप्त
सहयोग
मीनू अवस्थी
प्रबन्ध सहायक
राम मूरत यादव
संपादन संचालन : अवैतनिक

संपादकीय सम्पर्क :
डी-107, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006
दूरभाष : 09415243310
e-mail : kathakrama@gmail.com
e-mail : kathakrama@rediffmail.com

इस अंक का मूल्य : 50 ₹

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक-600 ₹, आजीवन 4000 ₹

संस्थाएं : वार्षिक-250 ₹, त्रैवार्षिक-700 ₹, आजीवन 5000 ₹

(kathakram SBI, Mahanagar Branch, Lucknow A/c 10059002392 IFSC-SBIN0008189)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, प्लाट नं. 755/99 A, गोयला इनडस्ट्रियल एरिया, यू.पी.एस.आई.डी.सी.-देवा रोड, चिनहट, लखनऊ-226019

कुछ विदेश और कुछ देश की

वर्तमान में पूरे विश्व पर तृतीय विश्व युद्ध का काला साया मंडरा रहा है। विश्व के विभिन्न हिस्सों में सालों से भीषण युद्ध चल रहा है जिससे दुनिया की एक बड़ी आबादी भय, असुरक्षा, तबाही, निर्वासन, परिजनों और परिचितों की मौत और सर्वत्र त्राहि त्राहि के आतंक में जी रही है। स्थितियां बड़ी विस्फोटक नजर आती हैं क्योंकि ये महज दो देशों का युद्ध नहीं रह गया है बल्कि इसकी आग में दुनिया की तकरीबन एक तिहाई आबादी संत्रास और तनाव के वातावरण में जी रही है। रूस और यूक्रेन के बीच लगभग पौने तीन सालों से और इजरायल और फिलिस्तीन के मध्य तकरीबन सवा साल से लगातार भीषण युद्ध जारी है जहां हजारों लोग मर कट रहे हैं, जगह जगह अनगिन लाशें बिछी नजर आती हैं, पूरे पूरे शहर आगजनी, उजाड़ और विध्वंस का शिकार हो गए हैं। और युद्ध के खात्मे का कोई आसार नजर नहीं आता। इन दोनों मामलों में विवाद अत्यंत पुराने हैं और जब तब इनके बीच झड़पें या मुठभेड़ें होती रहती हैं। भारत पाकिस्तान के बीच कश्मीर समस्या की मानिंद उनके विवादों का भी कोई हल नजर नहीं आता बल्कि समाधान का कोई प्रयास भी नहीं किया जाता क्योंकि इन मुद्दों को सुलगाए रखना वहां की सियासत की जरूरत तो है ही, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के अनेक देश भी उन्हें जीवन्त रखने में अपना हित देखते हैं।

इजरायल और फिलिस्तीन के मध्य 1948 से ही संघर्ष और तनाव जारी है पर अक्टूबर 2013 में आतंकी संगठन हमास ने इजरायल के एक मनोरंजन कार्यक्रम पर भयावह हिंसक हमला कर दिया जिसमें इजरायल के लगभग 1200 नागरिक मारे गए और करीब 250 लोगों को बंधक बना लिया गया। जाहिर है इजरायल ने बदला लेने के लिए पूरी ताकत झोंक दी और आज तक लगातार हमले करके लगभग 45000 फिलिस्तीन नागरिकों को मार दिया है जिसमें पंद्रह हजार से भी ज्यादा बच्चे, लगभग 150 पत्रकार/मीडिया कर्मी, 120 अकादमिक सदस्य और 400 से भी ज्यादा मानवतावादी कार्यकर्ता तथा यूएनओ की शांति बहाली में प्रयासरत कर्मी सम्मिलित हैं। बमवारी, मिसाइल्स से पूरे क्षेत्र को उजाड़ दिया है और चारों ओर विध्वंस, आगजनी और तबाही का दिल दहलाने वाला मंजर दीख पड़ता है। अब तक इजरायल के भी लगभग दो हजार नागरिक अपनी जान गवां चुके हैं। समूचा विश्व घोषित अघोषित रूप से उसमें शामिल है और या मूकदर्शक बना बैठा है। अमरीका, यूरोपीय देश, जो विश्व के शक्तिशाली मुल्क हैं, और मध्य एशिया के कुछ देश या तो एक पूरी कौम की तबाही पर खामोश हैं अथवा किसी न किसी पक्ष को हर संभव सहायता प्रदान कर रहे हैं। फ़िलिस्तीन के गाजा व अन्य क्षेत्रों के उजाड़ और जघन्य हिंसा के दृश्य देखकर कर मन दहल जाता है। अनेक युवा/प्रभावशाली लोग मारे गए हैं, अनगिनत औरतें विधवा हो गई हैं, रोज नन्हें शिशुओं को कफन में लपेटे जाने के दृश्य अंदर तक कंपकंपा जाते हैं, पूरे-पूरे परिवार खत्म हो गए हैं, अस्पताल, स्कूल, बाजार वगैरह जमींदोज हो गए हैं, शिक्षा, कारोबार तथा समाज की तमाम गतिविधियां ठप्प हो गई हैं पर दुनिया की तथाकथित कोई सुपरपॉवर उसे समाप्त करने के लिए कोई प्रभावी कदम नहीं उठा रही है। इसके विपरीत इजरायल को शस्त्र, गोला बारूद तथा युद्ध के अत्याधुनिक

उपकरण या संसाधन उपलब्ध करा रही है। दरअसल पूरी दुनिया दो ध्रुवों में विभाजित हो गई है तथा कोई भी गुट अपनी शक्ति प्रदर्शन का कोई अवसर गंवाना नहीं चाहता।

दूसरी ओर रूस और यूक्रेन के मध्य फरवरी 2022 से युद्ध जारी है हालांकि इन दोनों के मध्य संघर्ष फरवरी 2014 में आरम्भ हो गया था जब 'रेवोल्यूशन ऑफ डिग्निटी' (गरिमा क्रांति) के चलते यूरोपियन यूनियन समर्थक विद्रोहियों ने राष्ट्रपति विक्टर यानूकोविच, जो रूस समर्थक थे, को पद छोड़ने और यूक्रेन से पलायन करने पर विवश कर दिया था और रूस ने क्रीमिया क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था। 22 फरवरी 2022 को रूस ने यूक्रेन पर भीषण हमला कर दिया और तब से आज तक यह जारी है। वहां के कई नगर तबाह हो गए हैं और जान माल की भयंकर क्षति हुई है। माना जाता है अब तक यूक्रेन के एक लाख से भी ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं हालांकि रूस ने भी स्वीकार किया है कि इस संघर्ष में 2014 से उसके भी एक लाख अस्सी हजार लोगों की जान जा चुकी है। पर दोनों देश अडिग और अड़ियल हैं और किसी प्रकार के समझौते के लिए तैयार नहीं है। रूस तो अमरीका की तरह दादा है ही। यह कहना मुश्किल है कि कौन दोषी है पर एक छोटा देश रूस जैसी सुपरपॉवर से पिछले कई सालों से युद्ध कर रहा है जो हमें अमरीका वियतनाम युद्ध की याद दिलाता है। यह अन्य देशों के आर्थिक, शस्त्रों व संसाधनों के सहयोग व सहायता से ही संभव हो सका है। यह जगजाहिर था पर अमरीका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति ट्रंप की यूक्रेन से युद्ध समाप्त करने आह्वान के बाद यह एकदम स्पष्ट हो गया है कि यूक्रेन अमरीका की ताकत पर ही यह लड़ाई लड़ रहा है।

आज पूरी दुनिया इस तरह की गुटबाजी में विभक्त है कि किसी देश के अंदर भी कुछ खास घटित होता है तो उसके प्रभाव की जद में अन्य देश भी आ जाते हैं। ऊपर दिए दृष्टांत तो दो देशों के संघर्ष के हैं पर देशों की आंतरिक हालात से भी दूसरे देश प्रभावित होते हैं और हर प्रकार का हस्तपेक्ष करते हैं जिससे लगभग युद्ध जैसा माहौल बन जाता है। अभी हाल में सीरिया में हुए आंतरिक विद्रोह और तख्तापलट से कई देशों ने उस पर आक्रमण कर दिया। हालांकि यह देश का आंतरिक मामला था। अमरीका, इजरायल, ईरान आदि ने हवाई हमले किए जो हैरान करने वाला था। इन हमलों के पीछे तर्क यह था कि विद्रोही गुट एचटीएस (हयात तहरीर अल शाम), जो अमरीका द्वारा आतंकी संगठन के तौर पर सूचीबद्ध है और राष्ट्रपति बशर अल असद के रूस पलायन के बाद अब सत्ता में है, द्वारा वहां उपलब्ध शस्त्र व संसाधनों का दुरुपयोग न होने पाए। लगभग रोज ही बमवारी और मिसाइल आक्रमण हो रहे हैं। अभी इस क्षेत्र में युद्ध का आगाज तो नहीं हुआ है पर वहां के नागरिक भयंकर तनाव व असुरक्षा के माहौल में जी रहे हैं।

दरअसल दुनिया के प्रभावशाली देश पूरे विश्व पर अपना आधिपत्य जमाना चाहते हैं। इसके पीछे उनकी सत्ता और शक्ति की भूख तो है ही, पर इसकी जड़ में उस देश में उपलब्ध प्राकृतिक सम्पदा, गैस, तेल, खनिज आदि पर कब्जा व उनका दोहन करना भी है। यही आर्थिक प्रगति व खुशहाली का मार्ग प्रशस्त करता है। किसी भी देश की शक्ति का आकलन उसकी भौतिक उन्नति व उपलब्धियों के संरासं पर ही किया जाता है। उसी से तमाम अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं उनके सहयोग और प्रभाव से दबी रहती हैं।

इस चिंताजनक एवं हिंस्त्र परिदृश्य का सबसे दुर्भाग्यपूर्ण पक्ष यह भी है कि कोई अंतर्राष्ट्रीय संस्था/संगठन इसमें हस्तक्षेप करने में समर्थ या सक्षम प्रतीत नहीं हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ का भी कोई वजूद दिखलाई नहीं देता है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जिस पवित्र उद्देश्य तथा सामंजस्य, सद्भाव और शांति की उच्च व मानवीय भावना के साथ संरासं की स्थापना की गई थी, वह पूरी तरह पस्त और पराजित नजर आ रहा है जो शर्मनाक और शोचनीय है। उनके द्वारा शांति बहाली की दिशा में कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं की गई है जिससे इस अंतर्राष्ट्रीय संघ की कोई प्रासंगिकता नजर आए। ऐसा प्रतीत होता है कि संरासं विभिन्न देशों द्वारा अपनी भड़ास निकालने के लिए महज एक मंच है जहां समूची दुनिया का ध्यान आकृष्ट करने के लिए देश अपने विवाद प्रस्तुत करते हैं और शायद वहीं संरासं की भूमिका की अंतिम क्रिया सम्पन्न हो जाती है। दावे कुछ भी किए जाएं पर यह एक कड़वा सच है। जो देश कमजोर है, वही अपना पक्ष संरासं के सम्मुख रखता है। शक्तिशाली और समर्थ देश अपनी मर्जी से मनमानी कार्रवाई करते हैं। उन्हें किसी अंतराष्ट्रीय संगठन की चिंता नहीं है। न ही दुनिया का कोई देश उनकी कार्रवाई में हस्तक्षेप करता है बल्कि मित्र देश की

हर संभव सहायता व समर्थन करके अपने हितों को साधने में लगे रहते हैं।

आज के दौर में इन संगठनों की कार्यप्रणाली पर पुनर्विचार और उसमें सुधार करने की आवश्यकता है जिससे वह प्रभावशाली बन सकें। इन संगठनों में वीटो जैसी स्थाई शक्ति देकर कुछ देशों की दादागिरी को खत्म करने की जरूरत है। सुरक्षा परिषद के पुनर्गठन की बात बार-बार की जाती है पर होता कुछ नहीं है क्योंकि ताकतवर देश अपनी शक्ति को कम करना नहीं चाहते।

साहित्य से जुड़े हम लोग साहित्य की उपेक्षा के काफी अभ्यस्त हैं। समाज, सियासत या संगठन कोई साहित्य को भाव नहीं देता। न ही साहित्यकारों की कोई मान्यता या कद्र है। कभी नेहरु स्वयं साहित्य अकादमी के सम्मान समारोह में शिरकत करते थे। वह और उसके बाद कांग्रेस के शासनकाल में तमाम बुराइयों, कमियों या स्वेच्छाकारिता के बावजूद दो, चार साहित्यकार सत्ता में कुछ न कुछ दखल रखने का सामर्थ्य रखते थे या कम अज कम साहित्यिक बिरादरी को ऐसा अहसास तो कराते ही थे। दिनकर, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीकांत वर्मा, प्रभाष जोशी के बारे में हम सब जानते हैं। यहां उनकी भूमिका या उपलब्धियों पर कोई विवेचन अभीष्ट नहीं है जिसके सकारात्मक या नकारात्मक तर्क/पक्ष होना लाजमी है। पर मौजूदा दौर में तो कोई रचनाधर्मी सत्ता के गलियारे में कदम ही नहीं रख पा रहा है। सियासतदां को उनकी कोई चिंता भी नहीं है। अब साहित्य अकादमी के सालाना पुरस्कार समारोह में कोई महत्वपूर्ण राजनेता शिरकत नहीं करता। प्रतिष्ठित ज्ञानपीठ सम्मान जो बरसों राष्ट्रपति के हाथों दिलाया जाता था, अब फिल्म के 'महानायक' द्वारा प्रदान किया गया है।

उत्तर प्रदेश की स्थिति तो और अधिक निंदनीय और शर्मनाक है। प्रदेश के हिंदी संस्थान द्वारा पिछले तीन सालों से कोई पुरस्कार या सम्मान नहीं दिया गया है जिसके पीछे कोई आर्थिक कारण नहीं है बल्कि साहित्य और साहित्यकार का उपेक्षाभाव है। सरकार साहित्यकारों को कोई अहमियत देना नहीं चाहती या उसे निहायत गैरजरूरी समझती है। कोई इस बारे में आवाज भी नहीं उठा रहा है। हिंदी के समाचारपत्र भी इस मुद्दे पर पूरी तरह खामोश हैं। कोई जनप्रतिनिधि भी इस पर कुछ नहीं बोलता, न सदन के अंदर और न ही उसके बाहर। और पब्लिक सब जानते हुए भी उदासीन और नि:शब्द है।

कितना दुर्भाग्यपूर्ण है यह.... !

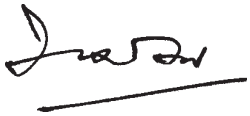

अगला अंक (103) : जनवरी-मार्च-2025

कथा क्रम

मधुरेश, नवनीत मिश्र, देवेन्द्र, सुषमा मुनीन्द्र, कंवल भारती, ओमा शर्मा, श्यामल बिहारी महतो, वंदना शुक्ल, गुलाम गोशे अंसारी, चन्द्रिका चौधरी, राहुल कुमार यादव, साई ब्रह्मानंदम आदि।

चुनिन्दा कहानियां, लेख, संवाद, लघु कथाएं, समीक्षा, रपट एवं कला-संस्कृति-रंगमंच से जुड़ी सामग्री। पठनीय तथा संग्रहणीय।